दिनांक : २ अगस्त, १९९९

सारथी

दोस्तों,

१४ अगस्त को हम हर साल एक साथ मिल बैठ कर अपनी स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के साथ स्वतंत्रता दिवस समारोह एक पर्व के रूप में मनाते आये हैं। इस वर्ष की हमारी अभिव्यक्ति का विषय है:

"गुलामी से मुक्ति"

आज के दिन हम हर साल एक विषय पर चर्चा करते हैं, आज का हमारा विषय है "कलाकार की गुलामी और गुलामी से मुक्ति"। सारथी की हमेशा से यही कोशिश रही है कि कलाकार अपने पैरों पर खड़ा हो, इसी कारण १९७७–१९७८ में बनाई गयी लोककलाकारों की देश में पहली भूले–विसरे कलाकार सहकारी समिति में कलाकारों के सहयोगियों ने कोई भी पद न लेने का निर्णय लिया, जिससे कलाकारों को इस समिति से अपनापन बना रहे, और पराधीनता का अहसास खतम हो । लेकिन एक सहयोगी के रूप में हम १ रूपया मानदेय पर काम करने लगे।

शादीपुर डिपो के कलाकार आज खुद अपना भला–बुरा समझने लगा है और अपने पैरो पर खड़ा होने जा रहा है। शादीपुर डिपो में भी महिलाओं का आगे आना बहुत जरूरी है लेकिन इस में पुरूषों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आगे बढ़ने के लिए पुरूप और महिला को एक ही गाड़ी के दो पहियों की भांति मिल कर चलना होगा तभी विकास संभव है। आज देशभर में कलाकारों के काफी शुभचिंतक हुए है लेकिन कलाकारों को इन के द्वारा दिये जाने वाले लाभ के प्रति हमेशा सचेत रहने की जरूरत है। पराधीनता अभिव्यक्ति को पंगु और लाचार बना देती है। "कलाकार का वातावरण एक खुले आसमान में उड़ते पंछी के समान है, सृजनता तभी फलती और फूलती है, जब उसमें आजाद रूप से अपने भाव प्रकट करने की क्षमता हो, लेकिन क्या आज हमारे पास वे साधन है जिससे हम अपनी क्षमता और सृजनता का प्रयोग कर सकें !!"

एक तरफ देश आज़ादी का अर्द्धशतक मनाने की तैयारी में है, वहीं दूसरी और हजारों वर्षों से देश की सांस्कृतिक विरासत को जिंदा रखे हुए कलाकार क्या स्वतंत्र है। आज के मुक्त बाजार व्यवस्था के माहौल में गरीब आदमी मैदाने जंग में हथियारों के बिना खड़ा है। सरकार से मिली छूट या आरक्षण बड़े लोग तो लड़ कर ले लेते हैं मगर छोटे का अपना हक मागना ही शंका की नजरों से देखा जाता है। और संचार के नये माध्यम भी बडे कलाकारों तक ही सीमित है। सारथी का एक ही उद्देश्य है, हर हुनरमन्द को सम्मान से जीने का हक मिले।

स्वतन्त्रता आन्दोलन ने अनेक प्रकार के लोगों की क्षमता, प्रतिभा और विभिन्न प्रकार की उर्जा का प्रयोग किया। आम जनता को संगठित कर आन्दोलन का संचालन करना एक रचनात्मक अभिव्यक्ति का परिचालक था और इन सबसे बढ़ कर शक्तिशाली वे विषय थे, जिन्होंने जनता को खुद–ब–खुद आगे आने को प्रेरित किया।

आज सभी हुनरमन्दों को उन विषयों को इंगित करने का समय आ गया है जिससे हम कला और कलाकार के भविष्य के लिए कुछ चुनौती पूर्ण सवाल खड़े कर सकें। साथ ही उनके उत्तर की खोज में भी जुटें। आज संस्कृति को एक महकमें या कुछ आयोजनों तक ही सीमित न रख कर विकास की मुख्य धारा से जोड़ने की जरूरत है जिससे देश के सर्वांगीण विकास में हमारा सहयोग हो सके।

आईये आज हम सब मिलकर यह विचार करें कि देश की समृद्धि और विकास को अपने फन, हुनर से आगे बढ़ाने में सृजनात्मक तरीकों का किस प्रकार से उपयोग करें। देश के आर्थिक विकास या आध्यात्मिक जागरण तभी होगा जब उसके सांस्कृतिक मूल्यों को सुचारू रूप से चलने दिया जायेगा।

निमन्त्रण

मित्रों,

हर वर्ष की तरह स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाने कि लिए आप सादर आमन्त्रित है।

आपसे निवेदन है कि १४ अगस्त ६.०० प्रातः भूले विसरे कलाकार वर्कशाप कठपुतली कालोनी शादीपुर डिपो में पहुंचने की कृपा करेंगे।

कार्यक्रम स्थल : भूले विसरे कलाकार, वर्कशाप कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली।
दिनांक : १४ अगस्त, १९९९ समय ६.०० बजे प्रातः